भाकृअनुप-सीफा में एफआरपी पर राष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में पीइएएसइएम केंद्र पर अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (एआईसीआरपी) ने 15-16 जुलाई, 2022 के दौरान "एफआरपी में कृषि उपकरणों के डिजाइन और विकास प्रक्रिया" पर राष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. आर.के. सिंह, परियोजना समन्वयक, पीइएएसइएम पर एआईसीआरपी, लुधियाना; डॉ. एस.के. जेना, परियोजना समन्वयक, जल पर सीआरपी, भाकृअनुप-आईआईडब्ल्यूएम, भुवनेश्वर और डॉ. एस.के. स्वाईं, निदेशक, भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर ने उद्घाटन सत्र में शिरकत की। कार्यक्रम में बारह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (ओडिशा, कर्नाटक, झारखंड, राजस्थान, मेघालय, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, उत्तराखंड, सिक्किम, छत्तीसगढ़ और जम्मू-कश्मीर) के प्रतिभागियों ने भाग लिया। सिपेट-आईपीटी, भुवनेश्वर कार्यक्रम के संचालन में तकनीकी सहायता प्रदान कर रहा है।

डॉ. बी.सी. महापात्र, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख अन्वेषक, पीएएसईएम पर एआईसीआरपी, आईसीएआर-सीफा ने इस कार्यशाला का आयोजन किया और देश के विभिन्न हिस्सों से आए अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर में एआईसीआरपी केंद्र की भूमिका और महत्वपूर्ण उपलब्धियों और प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम के डिजाइन पर प्रकाश डाला। डॉ. आर.के. सिंह, समारोह के मुख्य अतिथि ने खेतों की फसलों, सब्जियों, फलों, मत्स्य पालन, पशु उत्पादन आदि जैसे क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में सुधार के लिए प्लास्टिक के उपयोग पर प्रकाश डाला। हालांकि, प्रौद्योगिकी को उपलब्ध कराने के लिए और जरूरतमंद व्यक्तियों और भारतीय परिस्थितियों के अनुसार इसे मानकीकृत करने के लिए अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने प्लास्टिक पर अनुसंधान में तेजी लाने का आग्रह किया, जिसका भारतीय कृषि में प्लास्टिक के नए और आशाजनक अनुप्रयोगों को उद्यम करने के उद्देश्य से एकल उपयोग प्लास्टिक पर पुन: उपयोग किया जा सकता है।

डॉ. जेना ने देश के कृषि क्षेत्र में प्लास्टिक से बने तालाबों के उपयोग और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का लाभ उठाने और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए पर्यावरण के अनुकूल प्लास्टिक कल्चर प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने का भी आग्रह किया।

डॉ. एस.के. स्वाईं, निदेशक, भाकृअनुप-सीफा ने समारोह के अध्यक्ष के रूप में जलीय कृषि में प्लास्टिक के अनुप्रयोग पर संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उनमें से पोर्टेबल एफआरपी कार्प हैचरी जलकृषि क्षेत्र की स्टार तकनीक रही है। अन्य तकनीकियों में रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम, लाइव फिश ट्रांसपोर्ट टैंक, विभिन्न प्रकार के फीडर, सर्दियों के मौसम में तापमान बढ़ाने के लिए पॉली हाउस तालाब, हाइजीनिक फिश मार्केटिंग के लिए मोबाइल फिश वेंडिंग यूनिट, एक्वापोनिक्स, पोर्टेबल एफआरपी मगर और पाबदा हैचरी आदि।

डॉ. डी. पांडा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और श्री एन.के. चंदन, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया ।

(स्रोत): भाकृअनुप-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर